



सुमन

(28वाँ अंक वार्षिक पत्रिका 2021)



कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-1)
तमिलनाडु



संदेश

संवैधानिक कर्तव्यों एवं अंतर्निहित दायित्वों के सफल व दृढ़ निर्वाहन ही राजभाषा कार्यान्वयन है। गृहपत्रिका इसी अनुपालन का प्रतिमान है, अतः ई-पत्रिका “सुमन” के लिए बहुमूल्य योगदान प्रदत्त सभी अधिकारी व कर्मचारी बधाई के पात्र है। आशा है कि राजभाषा की प्रगतिशीलता का प्रमाण बनकर “सुमन” अनवरत रूप से जारी रहेगी। पत्रिका परिवार को भी इसकी सफलता के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

श्री. अ. व. न. न. न.

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-1)

संपादकीय.....



“सुमन” के 28 वें ई-अंक आपको समर्पित करते हुए मुझे बेहद खुशी है। आशा है कि सरकारी कार्यवहन में राजभाषा का अधिकाधिक प्रयोग प्रचार - प्रसार एवं प्रोत्साहन के लिए यह गृहपत्रिका योगदान देंगी। हिंदी के लिए उत्साहपूर्ण मनोभाव एवं राजभाषा में अपनत्व को दर्शाती यह पत्रिका राष्ट्रीय एकता का मूर्तीभाव है। लेखकों एवं पत्रिका-परिवार को मेरी शुभकामनाएं।

उप महालेखाकार

उप महालेखाकार/प्रशासन

हिन्दी अधिकारी की लेखनी से.....



भाषा प्रयोग कभी व्यक्ति सापेक्ष तो कभी समाजसापेक्ष होता है। परन्तु प्रयोजनमूलक हिन्दी का मुख्य बल प्रकार्यात्मक दृष्टि से अलग होता है। - साहित्य हिन्दी का लक्षण व व्यंजना के चमत्कार पर होता है। अतः प्रयोजनमूलक हिन्दी भाषा का वह स्वरूप हो जिसे प्रयोजन विशेष के लिए अपनाया जाता हो।

प्रशासनिक हिन्दी से तात्पर्य हिन्दी भाषा के उस रूप की ओर संकेत है जिसका प्रयोग सरकारी कामकाज में होता है। इसीलिए इसे कार्यालयीन हिन्दी भी कहा जाता है जिसका अभिप्राय है - सरकारी कामकाज में आनेवाली प्रयोजनमूलक हिन्दी।

प्रशासनिक हिन्दी का विकास जनसामान्य के जीवन से नहीं बल्कि कार्यालयों में कार्यरत अनुवादकों और हिन्दी अधिकारियों द्वारा हुआ, जिसमें तकनीकी शब्दावली आयोग इनके स्तंभ के समान विद्यमान है। इसलिए सहज और सरल होना प्रशासनिक हिन्दी के लिए बहुत कठिन होता है। तकनीकी क्षेत्रों के शब्दजाल इस आधुनिक युग में और भी बढ़ गए हैं तो लिप्यन्तरण ज्यादा जाल बिछा रहे है अनुवाद के लिए।

इन कठिन परिस्थितियों में गृहपत्रिकाएं राजभाषा हिन्दी के प्रचार - प्रसार में सकारात्मक रुख देने में सफल होती नज़र आती हैं।

जय हिन्दी...। जय हिन्द...।

पत्रिका परिवार

मार्गदर्शक

श्री रा. अम्बलवाणन
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-1)

परामर्शदाता

श्री अब्राहम जूदा शेफास ए.
उप महालेखाकार (प्रशासन)

संयोजक

श्रीमती एस. मनोन्मणी
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन)

संपादक मंडल

सुश्री षिबी टी. मांजूरान, हिन्दी अधिकारी
श्रीमती एस. अभयाम्बाल, वरिष्ठ हिन्दी अनुवादक
श्री राम लखन मीणा, कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक
श्री विपिन कुमार, कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक
श्री पंकज शर्मा, कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक
श्री लक्ष्मी नारायण प्रसाद, वरिष्ठ लेखापरीक्षक



प्रत्याख्यान : इस ग्रहपत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में जितने विचार हैं केवल रचनाकारों के अपने मात्र हैं। इसलिए इन्हें सृजनात्मकता की दृष्टि से पढ़ने की कृपा करें। रचनाओं की मौलिकता का दायित्व भी रचनाकारों तक सीमित रहेगा।

अनुक्रमणिका

क्रम.सं.	विषय	श्री/श्रीमती/कुमारी
1.	मुस्कान बाकी है	पंकज शर्मा
2.	हिंदी भाषा में लिंग निर्धारण	षिबी टी. मांजूरान, हिन्दी अधिकारी
3.	बाल श्रम	हर्ष कुमार, डी.ई.ओ.
4.	दीन- सेवा ही ईश्वर सेवा	आशा रामकृष्णन, सहायक पर्यवेक्षक
5.	मानसिकता है तो और बढ़ेगी हिन्दी	षिबी टी. मांजूरान, हिन्दी अधिकारी
6.	मां की साड़ी के पल्लू	आर. श्री विद्या, ले.प.अ
7.	भारतीय संविधान	अखिलेश, डी.ई.ओ.
8.	सफल जीवन	हर्ष कुमार, डी.ई.ओ.
9.	प्रेम में घनत्व श्रद्धा में विस्तार है	रवि कुमार-II, लेखापरीक्षक
10.	5 जी नेटवर्क	अखिलेश, डी.ई.ओ.
11.	जीवन की अविस्मरणीय घटना	आशा रामकृष्णन, सहायक पर्यवेक्षक
12.	कोविड-19 महामारी और ऑनलाइन कक्षा	आर. श्री विद्या, ले.प.अ
13.	श्रद्धांजली	आशा रामकृष्णन, सहायक पर्यवेक्षक
14.	कल्याण गतिविधियाँ	
15.	आओ थोड़ा हंस ले !!	रवि कुमार-II, लेखापरीक्षक

पत्रिका का मनोनयन श्री लक्ष्मी नारायण प्रसाद, व लेप द्वारा किया गया



मुस्कान बाकी है



पंकज शर्मा
(कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक)

कौन कहता है कि जिन्दगी यहाँ कमरों में कैद है?
की दो पलों के हिम्मत से लाँघना अभी ऊँची आसमान बाकी है।

भले ही कुछ देर के लिए ही सही मुरझा से गये है,
खिड़कियों से हर झाँकते हुए वे चेहरें!
कि बेशक उन बेजान चेहरों पर एक मुस्कान बाकी है।

क्यों हो रहे हो मायूस इन कुछ पल के कश्मकश से ?
कि अभी छूना तुम्हें है जो वे मुकाम बाकी है।
कि बेशक उन बेजान चेहरों पर एक मुस्कान बाकी है।

गर धुलने लगे जो सपने इन अशक-ए-निगाहों से,
तो रोकिए उन ज़स्बात-ए-समंदर को !
कि देना अभी भी उन सपनों को एक पहचान बाकी है।
कि अभी उन बेजान चेहरों पर एक मुस्कान बाकी है...!

गर मद्धिम पड़े कभी जो लौ सीने की ललक की,
तो हल्की सी हवा कीजिए इन तराबों को!
कि अभी खुद को जलाए रखने के लिए कई अरमान बाकी है।
कि बेशक उन बेजान चेहरों पर एक मुस्कान बाकी है।

गर कतर गये हो परं कुछ पल के रजोंगम से,
तो हौसला न हार !
कि अभी हौसलों की एक ऊँची उड़ान बाकी है।
कि बेशक उन बेजान चेहरों पर एक मुस्कान बाकी है।

गर रूक गये है जो कदम दुनिया के धोखा-ए-फरेबी से,
तो रोक न खुद को!
कि अभी उन फरेबी के बीच कई खुदार-ए-इंसान बाकी है।
कि बेशक उन बेजान चेहरों पर एक मुस्कान बाकी है।

टूटते हो क्यों हार के डर लड़ने से पहले ?
कि अभी जीतने को कई मंजील-ए-अरमान बाकी है।
कि बेशक उन बेजान चेहरों पर एक मुस्कान बाकी है , एक मुस्कान बाकी है।।।



**सोंधी सुगंध, मीठी सी भाषा
गर्व से कहो हिंदी है मेरी भाषा**

पुल्लिंग और स्त्रीलिंग पहचानने का गजब का फार्मूला

(केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो
की प्रशिक्षण -टिप्पणियों से संकलित)

हिंदी भाषा में लिंग निर्धारण (मात्र प्रयोग और अभ्यास पर आधारित)

हिंदी में काम करना आसान है, हिंदी सबसे सरल भाषा है, यह सब सुनने में तो अच्छा लगता है परन्तु जब वास्तव में काम करने की घड़ी आती है तो उस समय प्रायः हम लोगों को यह कहते सुना है कि हमें हिंदी तो आती है लेकिन शुद्ध हिंदी नहीं आती । कुछ लोग कहते हैं कि हिंदी में 'जेण्डर' का बड़ा चक्कर है ।

हिंदी भाषा या अन्य किसी भी भाषा की सरलता का जहाँ तक प्रश्न है यह सीखने वाले की लगन और रुचि पर निर्भर करता है । भाषा सीखने में नियमों से कहीं अधिक प्रयोग और अभ्यास काम आता है ।

यहाँ हिंदी भाषा के लिंग-विधान को ध्यान में रखते हुए प्रयोग और अभ्यास पर आधारित कुछ ऐसे तरीके (नियम नहीं) बताने की कोशिश की गई है जिससे हम लिंग निर्धारण की समस्या को काफ़ी हद तक सुलझा सकते हैं :

1. सामान्यतः अत्यधिक सुंदर और खतरनाक वस्तुएं / घटनाएं (Extreme beauties & Extreme dangers) स्त्रीलिंग वर्ग में आती हैं, जैसे खुशबु, हवा, सुगंध, सुंदरता आदि(अत्यधिक सुंदर) और आग, जेल, पुलिस, हड़ताल, चोरी, दुर्घटना आदि । (खतरनाक)

[केवल अभ्यास पर आधारित]

(अपवाद भी हो सकता है)

2. ई-6= स्त्रीलिंग अर्थात्

‘ई’ से अंत होने वाले 6 शब्दों को छोड़कर शेष सभी शब्द स्त्रीलिंग वर्ग में आते हैं ।

दूसरे शब्दों में केवल 6 शब्द ऐसे हैं जो ‘ई’ से अंत होते हैं लेकिन पुल्लिंग वर्ग में आते हैं ।

ये 6 शब्द हैं:

पानी दही घी मोती पक्षी और जी (मन)

उपर्युक्त शब्दों से कुछ वाक्य उदाहरण के रूप में देखे जा सकते हैं:

पानी बंद हो गया ।

दही खराब हो गया ।

घी महंगा हो गया है ।

मोती सुंदर लग रहा है ।

पक्षी उड़ रहे हैं ।

मेरा जी घबरा रहा है ।

3. एक ही वर्ग की छोटी और कमजोर वस्तुएं स्त्रीलिंग तथा बड़ी और मजबूत वस्तुएं पुल्लिंग वर्ग में आती हैं

कुछ उदाहरण :

स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग
नदी	सागर	नाव	जहाज
पहाड़ी	पर्वत	बस	ट्रक
रस्सी	रस्सा	साइकिल	स्कूटर
पेटी	बक्सा	पुस्तक	ग्रंथ

4. सामान्यतः मादकतापूर्ण और खाने-पीने के लिए प्रयोग में लाई जाने वाली वस्तुएं स्त्रीलिंग वर्ग में आती हैं । (Generally intoxicated & inhaling things come under feminine category) यहाँ शर्त है कि जिस वस्तु या पदार्थ की हम बात कर रहे हैं वह मादकता लिए हुए होनी चाहिए और साथ ही उसका प्रयोग खाने के लिए किया जाना चाहिए । (दोनों शर्तों की एक साथ उपस्थिति अनिवार्य है ।)

स्त्रीलिंग

सिगरेट
शराब
चरस
अफीम

पुल्लिंग

पानी
दूध
तेल
डीजल,पेट्रोल आदि

(अपवाद : गांजा)

उदाहरण के रूप में कुछ वाक्य :

सिगरेट जल रही है ।

पानी बंद हो गया है ।

यहाँ शराब मिलती है ।

आज दूध नहीं आया ।

पेट्रोल खत्म हो गया है ।

एक करोड़ की चरस पकड़ी

गई ।

इसके अलावा हिंदी भाषा में लिंग निर्धारण के कुछ और तरीके (नियम नहीं) भी हैं जो पूर्णतः प्रयोग और अभ्यास पर आधारित है ।

कुछ उदाहरण -

स्त्रीलिंग

तारीख (आज कितनी तारीख है ?)
सभी भाषाएं
(मुझे तमिल/मराठी/कन्नड़ आती है)

पुल्लिंग

महीना (मार्च का महीना शुरू हो गया है)
रंगों के नाम
(मुझे हरा/पीला रंग पसन्द नहीं है)
सप्ताह के दिन

धातुएं (चांदी को छोड़कर)
अनाज (मकई को छोड़कर)
वृक्षों के फल (इमली को छोड़कर)

इसके अतिरिक्त जो शब्द बहुवचन रूप में बदल जाए वह स्त्रीलिंग और जो न बदले वो पुल्लिंग वर्ग में आते हैं :

स्त्रीलिंग		पुल्लिंग	
एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
दुकान	दुकानें	मकान	मकान
कार	कारें	फोन	फोन
आँख	आँखें	घर	घर
सड़क	सड़कें	दोस्त	दोस्त

(केवल प्रयोग और अभ्यास पर आधारित)

अनुरोध

उक्त किसी भी प्रयोगाधारित तरीके (नियम नहीं) का पूर्णतया सुनिश्चित होने के बाद ही चर्चा करें ।
आप सभी प्रबुद्ध पाठकों के सवाल और सुझाव आमंत्रित हैं ।



हिंदी मेरा इमान है, हिंदी मेरी पहचान है
हिंदी हूँ मैं वतन भी मेरा, प्यारा हिन्दुस्तान है।

बाल श्रम



**हर्ष कुमार
(डी.ई.ओ.)**

बाल श्रम हमारे देश और समाज के लिए बहुत ही गम्भीर विषय है। बाल मज़दूरी को जड़ से उखाड़ फेंकना हमारे देश के लिए आज एक चुनौती बन चुका है। बाल मज़दूरी को बड़े लोगों और माफियाओं ने व्यापार बना लिया है, जिसके कारण दिन-प्रतिदिन हमारे देश में बाल श्रम बढ़ता जा रहा है, और बच्चों का बचपन खराब हो रहा है। इससे बच्चों के सर्वांगिक विकास में बाधाएँ उत्पन्न हो रही हैं।

बाल श्रम भारत के साथ-साथ सभी देशों में गैर-कानूनी है। यह हमारे समाज के लिए एक कलंक बन चुका है। यह समस्या समय के साथ-साथ बहुत उग्र रूप लेते जा रही है। इस समस्या को अगर समय रहते जड़ से मिटाया नहीं गया तो इससे पूरे देश का भविष्य संकट में आ सकता है।

बाल श्रम के कारण ही 14 वर्ष से कम आयु के बच्चों को उनके बचपन, खेल-कूद, शिक्षा का अधिकार छीनकर, उन्हें काम में लगाकर शारीरिक, मानसिक और सामाजिक रूप से प्रताड़ित कर, कम रुपयों में काम करा कर शोषण करके, उनके बचपन को श्रमिक में परिवर्तित कर दिया जाता है। जिसके कारण बच्चे अपने जीवन के अनमोल एवं खूबसूरत लम्हों से वंचित रह जाते हैं।

बाल श्रम पूर्ण रूप से गैर-कानूनी है। इस प्रकार की मज़दूरी को समाज के हर वर्ग द्वारा निंदित भी किया जाता है। भारत के संविधान के 1950 के 24 वें अनुच्छेद के अनुसार 14 वर्ष से कम उम्र के बच्चों से मज़दूरी, कारखानों, होटलों, ढाबों एवं घरेलू नौकर इत्यादि के रूप में कार्य करवाना बाल श्रम के अंतर्गत आता है। अगर कोई व्यक्ति ऐसा करता पाया जाता है, तो उसके लिए उचित दंड का प्रावधान है। ताजा आकड़ों के अनुसार भारत में 350 लाखसे अधिक बच्चे बाल मज़दूरी करते हैं। सबसे ज्यादा उत्तर प्रदेश, बिहार, राजस्थान में बाल मज़दूरी होती है।

बाल श्रम के पीछे कई कारण हैं, जिनमें प्रमुख कारण है :-

- I. बाल मज़दूरी का सबसे बड़ा कारण हमारे देश में गरीबी का होना है। गरीब परिवार के लोग अपनी आजीविका चलाने में असमर्थ होते हैं, इसलिए वे अपने बच्चों को बाल मज़दूरी के लिए भेजते हैं।
- II. शिक्षा के अभाव के कारण अभिभावक यही समझते हैं कि जितनी जल्दी बच्चे कमाना सीख जाए उतनी ही जल्दी उनके लिए अच्छा होगा।
- III. बाल श्रम को बढ़ावा इसलिए भी मिल रहा है क्योंकि बच्चों के कार्य करने के फलस्वरूप में कम रुपये दिए जाते हैं, जिसके कारण लोग बच्चों को काम पर रखना अधिक पसंद करते हैं।
- IV. हमारे देश में लाखों के संख्या में बच्चे अनाथ होते हैं, बाल श्रम बढ़ने का एक कारण यह भी है। कुछ असमाजिक तत्व उन बच्चों के डरा-धमका कर भीख माँगने और मज़दूरी करने के लिए मज़बूर कर देते हैं।
- V. कई बार बच्चों की पारिवारिक मज़बूरियाँ भी होती हैं, क्योंकि कुछ ऐसी दुर्घटनाएँ हो जाती हैं, जिसके कारण उनके परिवार में कमाने वाला कोई नहीं रहता है। इसलिए उन्हें मज़बूरी वश बचपन में ही होटलों, ढाबों, चाय की दुकानों, कल-कारखानों में मज़दूरी करने के लिए जाना पड़ता है।
- VI. भारत में जनसंख्या वृद्धि बहुत तेजी से बढ़ रही है, जिसके कारण जरूरती वस्तुओं का मूल्य दिन-प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है, जिसके फलस्वरूप गरीब लोग अपने परिवार का भरण-पोषण नहीं कर पाते हैं, इसलिए परिवार के सभी सदस्यों को मज़दूरी करनी पड़ती है, जिसमें बच्चे भी शामिल होते हैं। इसलिए न चाहते हुए भी बच्चों को परिश्रम करना पड़ता है।
- VII. बाल मज़दूरी का एक कारण भ्रष्टाचार भी है। तभी तो बड़े-बड़े होटलों, ढाबों, और कारखानों पर उनके मालिक बिना किसी भय के बच्चों को बाल मज़दूरी पर रख लेते हैं, क्योंकि उन्हें पता होता है कि अगर पकड़े भी गए तो वे घूस देकर छूट जाएँगे, इसलिए भ्रष्टाचार बाल मज़दूरी का एक अहम भूमिका निभाता है।
- VIII. भारत सरकार ने बाल मज़दूरी को रोकने के लिए कानून तो बनाए हैं, लेकिन उन कानूनों में काफी खामियाँ हैं, जिसका फायदा उठाकर लोग इस गुनाह को अंजाम देते हैं और कई बार तो कानून का नियम पूर्वक पालन भी नहीं किया जाता है।

बाल श्रम के कई दुष्परिणाम होते हैं, जो कि निम्नलिखित हैं :-

- I. जीवन का सबसे सुखद एवं अनमोल पल बचपन ही होता है। जब हम बच्चे होते हैं तो हमें किसी भी बात की चिंता नहीं रहती है। हम खेलौने से खेलते हैं एवं जो चाहे पढ़ सकते हैं। सभी लोग हमसे स्नेह एवं प्यार करते हैं, लेकिन जिन बच्चों को बाल मज़दूरी में लगा दिया जाता है। वह कभी भी खेल नहीं पाते हैं और अपना मनचाहा काम नहीं कर पाते हैं। जिसके कारण उनका पूरा बचपन मज़दूरी के काम करने में बीत जाता है।
- II. बाल मज़दूरी करने वाले बच्चे अक्सर कुपोषण का शिकार हो जाते हैं क्योंकि उनके मालिक उनसे काम तो ज्यादा करवाते हैं लेकिन उनके उन्हें खाने को कुछ भी नहीं देते हैं। जिसके कारण उनके शरीर में ऊर्जा की कमी हो जाती है और वे धीरे-धीरे कुपोषण के शिकार हो जाते हैं।
- III. बाल मज़दूरी करने वाले बच्चे और बच्चियों का शारीरिक शोषण भी किया जाता है। एक रिपोर्ट के अनुसार बाल मज़दूरी करने वाले बच्चों में से लगभग 40% बच्चों का शारीरिक शोषण किया जाता है। यह बहुत ही गंभीर बात है, लेकिन इस पर कभी भी ध्यान नहीं दिया जाता है।
- IV. मज़दूरी करते समय बच्चों से अक्सर गलतियाँ होती रहती हैं। गलतियाँ तो बड़े लोगों से भी होती हैं, लेकिन बच्चों को डाँट लगाना आसान होता है इसलिए उनसे काम कराने वाले मालिक उन्हें मानसिक प्रताड़ना देते हैं। जो कि एक छोटे से बच्चे के मस्तिष्क पर बुरा प्रभाव डालते हैं।
- V. ज्यादातर गरीब परिवार के बच्चे पढ़-लिख नहीं पाते हैं, इसी कारण वे अच्छी नौकरी नहीं कर पाते हैं और देश के विकास में सहयोग नहीं कर पाते हैं इसलिए देश का आर्थिक विकास भी धीमा पड़ जाता है।
- VI. बाल मज़दूरी के कारण बच्चे अशिक्षित रह जाते हैं। देश का आने वाला कल अंधकार की ओर जाने लगता है। इसके साथ ही बेरोज़गारी, गरीबी और अधिक बढ़ने लगती है।
- VII. बच्चों से काम करवाने से बच्चों का शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और सामाजिक विकास रुक जाता है।

बाल श्रम हमारे समाज के लिए एक अभिशाप है जो हमारे समाज को अन्याय मुक्त बनने नहीं देगा। हमें हमेशा इस बात को ध्यान में रखना चाहिए कि बच्चे से काम करवाने के

बदले उसे पैसे या खाना देकर हम उस पर कोई एहसान नहीं करते हैं बल्कि हम उसके भविष्य के साथ खेलते हैं। इसे रोकने के लिए हमें कुछ उपाय करने होंगे। जैसे :-

- सबसे पहले हमें अपनी सोच को बदलना होगा। अपने घरों या दफ्तरों में किसी भी बच्चे को काम पर नहीं रखना चाहिये।
- अगर आपके सामने कोई भी बाल श्रम का मामला आये तो सबसे पहले नज़दीकी पुलिस स्टेशन में शिकायत दर्ज करवानी चाहिये।
- आम आदमी को भी बाल मज़दूरी के विषय में जागरूक होना चाहिए और अपने समाज में इसे होने से रोकना चाहिये।
- गरीब माता-पिता को अपने बच्चों की शिक्षा की ओर ध्यान देना चाहिए क्योंकि आज सरकार मुफ्त शिक्षा, खाना और कुछ स्कूलों में दवाईयाँ जैसी चीजों की सुविधाएँ प्रदान कर रही है।
- कल-कारखानों और दुकानों के लोगों को प्रण लेना चाहिए कि वे किसी बच्चे से मज़दूरी नहीं करवाएँगे और काम करवाने वाले लोगों को रोकेंगे।
- भ्रष्टाचार के कारण बाल श्रम करवाने वाले अपराधी आसानी से छूट जाते हैं या फिर उन्हें गिरफ्तार नहीं किया जाता । जिसके कारण छोटे बच्चों को मज़दूरी करनी पड़ती है, इसलिए हमें भ्रष्टाचार पर लगाम लगानी चाहिए।
- हमारे समाज में बहुत से अच्छे व्यक्ति हैं लेकिन हमें और अच्छे व्यक्तियों की आवश्यकता है जो कि कम-से-कम एक गरीब बच्चे की पढ़ाई का पूरा खर्च उठा सके , क्योंकि अकेली सरकार सब कुछ नहीं कर सकती । इसलिए हमें आगे बढ़कर गरीब बच्चों की पढ़ाई-लिखाई में मदद करनी चाहिए।

बाल मज़दूरी हमारे देश के लिए एक गंभीर सामाजिक समस्या है । जिसे सभी को जल्द-से-जल्द खत्म करने में मदद करनी चाहिए। अगर जल्द ही समस्या पर कोई उचित कदम नहीं उठाया गया तो देश का भविष्य अंधकारमय हो जाएगा क्योंकि बच्चे ही हमारे देश का सुनहरा भविष्य हैं।

अगर उन्हीं का बचपन अंधेरे और बाल श्रम में बीतेगा तो हम एक सुदृढ़ भारत की कल्पना कैसे कर सकते हैं। अगर हमें नए भारत का निर्माण करना है, तो बाल मज़दूरी को जड़ से उखाड़ फेंकना होगा। जो कि सिर्फ हमारे और सरकार के सहयोग से ही संभव है।



दीन- सेवा ही ईश्वर सेवा



आशा रामकृष्णन
(सहायक पर्यवेक्षक)

विद्यालय से घर लौट रही थी शाम की बेला हो चली थी, सड़कों पर बत्तियाँ जगमगाने लगी थी बस स्टैंड पर लंबी कतार लगी हुई थी सोचा टहलने चलूँ । एकाएक रामचरितमानस की चौपाईयाँ कान में पड़ीं । एक सज्जन रामचरित मानस का पाठ कर रहे थे उनके चारों ओर बैठे कुछ लोग सुन रहे थे, सहसा उन्होंने गाया - देखेऊँ करि विचार मन माहीं । नाहिं दरिद्र सम दुख जग माहीं । अर्थात् मैंने अच्छी तरह सोच विचार कर देख लिया है कि संसार में दरिद्रता के समान कोई दूसरा दुख नहीं है । क्षण भर के लिए पैर वहीं ठिठक गए । फिर आगे बढ़ा लेकिन घर पहुंचने तक मेरे मन में उनके विचार आते जाते रहे ।

इस संसार में कुछ लोग बड़े भाग्यवान हैं वे धन सम्पत्ति के ढेर पर बैठे हुए हैं , उन्हें किसी प्रकार का कोई आभाव नहीं है । वे बड़े सामर्थ्यवान हैं । दूसरी तरफ वे लोग हैं जो निरंतर आभावों की ज्वाला में जल रहे हैं । उनकी इच्छाएं उनके मन में ही घुट कर रह जाती हैं । उनके लिए जीवन एक अभिशाप बन कर रह गया है वे दीन कहलाते हैं और संसार के सबसे बड़े दुख दरिद्रता से पीड़ित हैं । विडंबना यह है कि उनकी संख्या बहुत बड़ी है और लगातार बढ़ती ही जा रही है ।

मानव जीवन में अनादिकाल से गरीब और अमीर, इन दो वर्गों का अस्तित्व रहा है । सच पूछा जाए तो धनी वर्ग का अस्तित्व दीन-हीनों के समूह पर निर्भर है । इसके साथ-साथ जितने भी महापुरुष हुए हैं, सभी ने दीन-दुखी वर्ग की सेवा को मनुष्य का परम धर्म बताया है । सभी धर्मों में दीन हीनों की सेवा को प्रधानता दी गई है । इस्लाम धर्म में रमज़ान के महीने में होने वाली कुल आय के ढाई प्रतिशत का दान करना जरूरी बताया गया है , उसी प्रकार ईसाई धर्म भी दीनों की सेवा को मनुष्य का कर्तव्य बताया है, क्योंकि दीन ही ईश्वर के राज्य का अधिकारी है ।

मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु उसका अहंकार या घमंड है, अहंकारी व्यक्ति अपने को दूसरों से बड़ा समझता है और उनका अपमान करने से नहीं चूकता यदि उसके अहंकार को ठेस लगती है तो वह आपे से बाहर होकर उग्र रूप धारण कर लेता है सर्वथा अहंकारमय रहता

है लेकिन जो अहंकारशून्य हो जाता है वो मानव का सच्चा सेवक बन जाता है। श्रीराम ने सबरी के जूठे बेर खाकर उसकी दीनता को महानता में बदल दिया था । श्रीकृष्ण ने दुर्योधन का निमंत्रण ठुकराकर विदुर के घर साग खाया था । गुरु नानक देव ने जमींदार के न्योते की उपेक्षा कर लालू बढ़ई के घर की रोटी खाई थी और उनकी सेवा को ईश्वर की सेवा माना था ।

दीनता प्रायः धन के आभाव को ही कहते हैं । दीनता के और भी कई प्रकार हैं कायरता भी एक प्रकार की दीनता ही है । राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने गुलामी के कारण कायर बने भारतवासियों को जन सत्याग्रह और अहिंसा के शस्त्र देकर वीर बनाया, और उनकी कायरतारूपी दीनता को दूर किया । महर्षि दयानंद ने जब अपनी ओजस्वी वाणी से अशिक्षा और अंधविश्वास के अंधकार में भटकती जनता को सन्मार्ग दिखाया एवं उसकी वैचारिक दीनता दूर की । इसके अलावा जो तथाकथित धनी व्यक्ति हैं, वे भी इस प्रकार से दीन ही हैं क्योंकि उनकी इच्छाएं द्रोपदी के चीर की तरह बढ़ती ही चली जाती हैं । दीनता के इन विभिन्न प्रकारों को दूर करना भी दीन की सेवा करना ही है ।

अंतराष्ट्रीय जगत में पश्चिमी राष्ट्रों ने एशिया, आफ्रीका और लेटिन अमेरिका के देशों का मनमाना शोषण कर अपनी सम्पन्नता बढ़ाई और उन्हें दीन हीन बना कर छोड़ दिया अब उनके लिए अनिवार्य हो गया है कि वे शोषित देशों की सहायता करें । अन्यथा विश्व में विप्लव होने की आशंका बढ़ती जा रही है । सोमालिया की अकालग्रस्त मानवता की सहायता के लिए जो अंतर्राष्ट्रीय जगत दौड़ पड़ा है , उसके पीछे दीन सेवा की उत्कट भावना ही है ।

सारांश कि - दीनों की सेवा करना अपना परम कर्तव्य समझना चाहिए । दीन-सेवा वास्तव में ईश्वर-सेवा ही है । जो दीनों की सेवा करता है, वह दीन बंधु ईश्वर के समकक्ष हो जाता है ।



भारत माता के माथे पर बिंदी



हमारी राजभाषा हिंदी

मानसिकता है तो और बड़ेगी हिन्दी



षिबी टी. मांजूरान
(हिन्दी अधिकारी)

**“इदमन्धः नमः कृत्स्नं जायेत भुवनत्रयम्
यदिशब्दाहवयं ज्योति ससंसारं नदीप्यते ”**

भाषा के महत्व को बहुत पहले ही चिंतकों और दार्शनिकों ने समझ लिया था । वस्तुतः भाषा के बिना सृष्टि का कोई मतलब ही नहीं हो सकता था । अतः कहा गया है कि सृष्टि के अंधकार में भाषा ही ज्योति है । आप सब जानते हैं , भाषा का वह रूप राष्ट्रभाषा बनता है जो संपूर्ण देश में विविध व्यवहारों , वैचारिक आदान प्रदान का माध्यम हो । राष्ट्रीय सांस्कृतिक गरिमा और गौरववाली परंपरा को राष्ट्रभाषा के माध्यम से महसूस किया जा सकता है । विश्व के अधिकांश देशों में राष्ट्रभाषा , संपर्क भाषा तथा राजभाषा के विभिन्न भूमिकाओं को एक ही भाषा निभाती है । ऐसे राष्ट्र विकसित कोटि के पाए जाते हैं । जैसे जापान , चीन आदि ।

आप खुद इस बात से वाकिफ है कि कई विदेशी तकनीक एवं वैज्ञानिक विचारों व ज्ञान के आदान - प्रदान की खातिर विदेशी भाषाएँ सीखने की नौबत आती है जैसे - रूसी भाषा । क्योंकि वे बातें आपको रूस से सिर्फ रूसी में प्राप्त होंगी , अंग्रेजी में नहीं । तो क्या वे विज्ञान व तकनॉलजी में विकसित नहीं हुए ? कोई भी देश राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र नहीं कहला सकता । आज इस बात की हमारे राष्ट्र को तीव्र आवश्यकता है कि समाज के लिए विभिन्न क्षेत्रों में सुरक्षा की दृष्टि से एक राष्ट्रभाषा मिले । जापान , चीन , फ्रान्स , जर्मन , अरब आदि राष्ट्रों के अंग्रेजी जाननेवालों के मुंह से भी अपनी राष्ट्रभाषा निकलती हैं । क्या किसी की मजाल है कि उन्हें पिछड़ा हुआ कहें ? 17 वीं सदी तक एशिया यूरोप को विज्ञान आदि का लाभ बाँटता था किन्तु आज यूरोप एशिया के बड़े भाग को अपने ज्ञान - विज्ञान के बल पर तैयार वस्तुओं का बाजार बना चुका है, वैसे चीन और जापान को छोड़कर ।

भारत में जहाँ विज्ञान और टेक्नोलॉजी को अंग्रेजी भाषा पर निर्भर रखा गया है - समाज दो विपरीत समाजों में बँट गया । एक रहा विज्ञान और टेक्नोलॉजी की जानकारी रखने तथा सुविधा लेने वाला छोटा समाज । दूसरा अंग्रेजी ज्ञान से वंचित विशाल समुदाय । यहाँ जनता को बुद्धिजीवियों , विज्ञान तथा प्रगति से वंचित कर दिया गया । हमारे देश में विज्ञान तथा इससे संबंधित विषयों पर बहुत पहले से ही कार्य होते रहे हैं । मोटे तौर पर देखने से भी पता चलता

है कि संस्कृत साहित्य के बाद भी बान के विविध क्षेत्रों एवं शास्त्रीय विषयों पर निरंतर लेखन होते रहे हैं । जैसे लक्ष्मीशंकर मिश्रा के " सरलत्रिकोणमिति की रूपरेखा " ,

डॉ कल्याणवक्ष मायूर बारा रचित " वायुमंडल गोरक्ष प्रसाद श्रीवास्तव द्वारा रचित " रासायनिक तत्व विश्लेषण " इत्यादि । इस दिशा में निष्ठा और संकल्प के सहारे बळकर सफलता पायी जा सकती है । जो लोग अंग्रेजी को अपरिहार्य मान बैठे हैं उन्हें समझना चाहिए कि अंग्रेजी से पूर्व हमारे देश ने जो शान- विज्ञान के क्षेत्र में विश्व को मौलिक एवं ठोस कार्यों का योगदान भारतीय भाषा के माध्यम से किया था । नलंदा , तक्षशिला आदि विश्वविद्यालयों में विदेशी पढ़ने आते थे । विदेश यात्री हुयानसाङ्ग नलंदा में तर्कशास्त्र के विद्यार्थी थे । तब विद्यार्थियों की संख्या 5000 थी । चीन , मलया , सुमात्रा , जावा , जपान आदि देशों से विद्यार्थी एवं गवेषक वहाँ थे । पहली शताब्दी तथा पांच शताब्दी तक के विश्वविद्यालयों में पूरी दुनिया में यह अव्वल स्थान पर था । वहाँ 18 विषय पढ़ाये जाते थे । वह भी खाना , पीना , रहना , पढ़ना सब मुफ्त में । केवल श्रेष्ठ विद्यार्थी वहाँ दाखिला जाते थे । हाँ , अंग्रेजी के आने से देश का मौलिक चिन्तन अवश्य बाधित हुआ है । अतः : उसमें सहज स्वाभाविक भारतीय प्रतिभा का विकास संभव नहीं है । गुलामी की मनोवृत्ति में विकास कहां तक संभव होगा भी ?

योग , आयुर्वेद , कथकळी आदि सीखने के लिए विदेशी भारत आकर संस्कृत और हिंदी एवं मलयालम सीखने लगे हैं । हमारे अमूल्य संसाधनों से खुद को वंचित रखकर हम पश्चिम की ओर ताकते हैं । क्या आपको मालूम है अमेरिका के स्कूलों मेंसे 20 से अधिक हिंदी एक विषय के रूप में अपनाई जा रही है ?

बिलगेट्स अपने software के लिए हिंदी को यहाँ तक कि दक्षिण भारतीय भाषाओं को भी अपना रहे हैं । राष्ट्रपति डॉ कलाम के एक भाषण के बाद ऑटोग्राफ पूछती हुई आई दस साल की लडकी से उन्होने पूछा : तुम्हारी महत्वाकांक्षा क्या है ? लडकी ने तुरंत " मैं एक विकसित भारत में जीवन बिताना चाहती हूँ " उन्होने अपनी पुस्तक " भारत 2020 - नवनिर्माण की रूपरेखा " का समर्पण उस लडकी को तथा समान आकांक्षावाले भारतीयों के लिए किया है । हिंदी में भी वह किताब उपलब्ध है क्योंकि उन्होने उस महत्वाकांक्षा को जन साधारण में जगाना चाहा ।

भारत सरकार ने राजभाषा के लिए नीति अपनाई है । संवैधानिक उपबन्ध के रूप में अनुच्छेद 343,345,350,351 आदि संरचित हैं । इसके द्वारा संकल्पना रही थी कि हिंदी भाषा की प्रसार वृद्धि करना , उसका विकास करना , ताकि यह भारत की सामासिक संस्कृति के सब तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम हो सके ।

इन सबके बावजूद जो कमी महसूस होती है तो वह मानसिकता की है ।

अतः और बढ़ेगी हमारी हिन्दीसही मानसिकता है तो !



माँ की साड़ी के पल्लू



श्रीमती आर. श्री विद्या
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

माँ के पल्लू की विशेषता, माँ की गरिमामयी छवि प्रेम, स्नेह, ममता आदि प्रदान करने का प्रतीक है। छोटे बच्चे हमेशा अपने माँ के पल्लू को पकड़ते फिरते हैं, उसकी छाया में बढ़ते हैं, अपने आप को सुरक्षित महसूस करते हैं।

माँ का पल्लू अधिक उपयोगी है अनेक विषयों में काम आता है जैसे गर्म बर्तन चूल्हे से उठाने, कभी हाथ पोछने के लिए, खाने के बाद धोकर मुँह साफ पल्लू से करना भी आनंद होता तौलिया की जगह भी लेता, रसोई में एप्रोन का काम भी आता है।

माँ की गोद में सोने वाले बच्चों का चादर के काम आता है, कभी आँख में दर्द हुआ तो पल्लू को गोल बनाकर, माँ फूँक मारकर, गर्म करके आँखों में लगा देती तो दर्द मानो गायब हो जाता है।

बच्चे को किसी अनजान के घर पर आने से बच्चे माँ के पल्लू की ओट में छिपकर देखते हैं, जब बच्चों को किसी बात पर शर्म आती है तो पल्लू से अपना मुँह ढक कर छुप जाते हैं।

माँ का पल्लू मार्गदर्शक का भी काम करते हैं जब तक बच्चे के हाथ में पल्लू रहता है मानो सारी कायनात उनकी मुट्ठी में होती है माँ का एहसास उसकी साड़ी की पल्लू जताती है माँ की अनुपस्थिति में बच्चे साड़ी के पल्लू में आश्रय लेते हैं।

गर्मी के दिनों छाया के लिए पल्लू के नीचे चलते हैं
जब मौसम ठंडा होता है तो मां चारों ओर लपेटकर ठंड से बचाने की कोशिश करती
बारिश होने पर पल्लू ही पहली छतरी का काम आता है।

मां पल्लू से सुगंधित फूल संग्रहित करती
कभी पेड़ों से गिरने वाले फूल को इकट्ठा करती

पल्लू कभी घर में रखे सामान से धूल हटाने में भी सहायक होता है
प्रसाद धन दान पाने या देने के समय बहुत विशेष रूप पल्लू धारण करता है।

कभी कोई वस्तु खो जाए तो एकदम से पल्लू में गांठ लगाकर निश्चित हो जाती
कि अवश्य जल्दी मिल जाएगी ऐसा विश्वास भी है
पल्लू एक चलता फिरता बैंक भी है पल्लू में पैसे बांध दिए जाते हैं
जब चाहिए निकालकर माँ देती है।
पल्लू में कितने पैसे हैं सिर्फ माँ जानती है
शादी के समय पल्लू बंधन के प्रतीक हैं वर-वधू की पल्लू से बांध दिया जाता है
साड़ी में भी पल्लू अहम चीज है
जितना बढ़िया पल्लू उतना अधिक दाम।

माँ की साड़ी का पल्लू कुछ और नहीं बल्कि एक जादूई एहसास है
इस एहसास को हमारी कुछ पीढ़ी जानती हैं,
लेकिन आज की पीढ़ी इससे वंचित है क्योंकि
आजकल की मां तो ज्यादा साड़ी नहीं पहनती आखिर माँ तो माँ है
उसका दुपट्टा या नाइटी भी काम आता है
पर मां की साड़ी के पल्लू का विशेष स्थान है महत्व है । है ना.....



सफल जीवन



**हर्ष कुमार
(डी.ई.ओ)**

एक बेटे ने पिता से पूछा- पापा..! ये 'सफल जीवन क्या होता है?'

पिता ने बेटे को छत पर पतंग उड़ाने ले गए।

थोड़ी देर बाद बेटा बोला,

पापा..! ये धागे की वजह से पतंग ऊपर नहीं जा पा रही है, तो क्या हम इसे तोड़ दें?

पिता ने धागा तोड़ दिया।

पतंग थोड़ी-सी ऊपर गई और उसके बाद लहरा कर नीचे आयी और दूर अनजान जगह पर जा कर गिर गई।

तब पिता ने बेटे को जीवन का दर्शन समझाया, बेटा..!

'जिंदगी में हम जिस ऊंचाई पर है।' हमें अक्सर लगता कि कुछ चीजें जिनसे हम बंधे हैं वे हमें और ऊपर जाने से रोक रही हैं जैसे घर परिवार, माता-पिता, अनुशासन आदि और हम उनसे आजाद होना चाहते हैं।

वास्तव में , यही वे धागे होते हैं जो हमें उस ऊंचाई पर बना के रखते है।

इन धागों के बिना हम एक बार तो ऊपर जाएंगे, परंतु बाद में हमारा वहीं हाल होगा जो बिना धागे की पतंग का हुआ।

अतः जीवन में यदि तुम ऊंचाइयों पर बने रहना चाहते हो. तो कभी भी इन धागों से रिश्ता मत तोड़ना।

शिक्षा- `` धागा और पतंग जैसे जुड़ाव के सफल संतुलन से मिली हुई ऊंचाई को ही 'सफल जीवन' कहते हैं । ``



प्रेम में घनत्व श्रद्धा में विस्तार है



रवि कुमार ।।
(लेखापरीक्षक)

प्रेम और श्रद्धा दोनों ही मनुष्य के उत्कृष्ट भाव हैं। वे दोनों ही मनुष्य को 'पर' से जोड़ते हैं और उसमें अन्य के लिए त्याग, सेवा, समर्पण एवं सम्मान का भाव पैदा करते हैं; किंतु प्रेम और श्रद्धा मूल रूप से भिन्न भी है तथा इनका फैलाव आयामी है।

प्रेम एक व्यक्ति पर केंद्रित होता है और उसके प्रति पूर्ण समर्पण में अपना वजूद रखता है। प्रेम में यह अपेक्षा होती है कि उस प्रेम-आराध्य के प्रति केवल वही समर्पित हो, अन्य कोई नहीं। किंतु वह समर्पण बहुत गहरा हो, घना हो। दो प्रेमियों के बीच एक ऐसा प्रेम-प्रवाह हो जो अतल गहरा हो। भाव को न तो कोई छुए और न हीं उसमें बाधा डाले। वहां कोई अन्य उपस्थित ही नहीं रहे। जबकि श्रद्धा के भाव में एकांतिक नहीं है, अधिकाधिक विस्तार हैं। जिसके प्रति हमारी श्रद्धा होती है हम चाहते हैं कि उसके प्रति त्याग से ज्यादा लोगों की श्रद्धा हो। हम अपने श्रद्धा के भाव को अधिक से अधिक लोगों में विस्तार करना चाहते हैं। इस प्रकार प्रेम का प्रसार जहां vertical है तो श्रद्धा का horizontal। प्रेम में यह कामना रहती है "ना मैं देखूं और को ना तोहि देखन देहू" और श्रद्धा में इच्छा रहती है कि "मैं तो नित्य देखन भला सब कोई देखन देहूं"।



5 जी



**अखिलेश
(डी.ई.ओ.)**

भारत-दूरसंचार के क्षेत्र में एक बड़ी क्रांति आने वाली है। भारत में तीन माह में 5 जी नेटवर्क लग सकती है पर इस नेटवर्कका ढांचाअभी तैयार नहीं हो सका है। दूरसंचार उद्योग के विशेषज्ञों का कहना है कि भारत में 5 जी नेटवर्क तीन महीने में लगाया जा सकता है, लेकिन यह सीमित क्षेत्रों में ही होगा। उन्होंने कहा कि इस प्रौद्योगिकी को समर्थन के लिए ऑप्टिकल फाइबर (Optical Fiber) आधारित ढांचाअभी तैयार नहीं है। नोकिया इंडिया के प्रमुख विपणन एवं कॉर्पोरेट मामले अमित मारवाह ने कहा कि भारत को 5 जी सेवाओं के नेटवर्क पर निर्णय लेना होगा, अन्यथा वह अगली पीढ़ी की प्रौद्योगिकी का लाभ लेने से चूक जाएगा ।

5 जी नेटवर्क क्या है

आज के समय में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है, जो इंटरनेट का इस्तेमाल ना करता हो। हमारे भारत देश में पहले के मुकाबले अब गांव में रहने वाले लोग भी इंटरनेट का इस्तेमाल करने लगे हैं। हमारे देश की सरकार ने भी भारत को डिजिटल इंडिया का नाम दिया है और सरकारी दफ्तरों में भी सभी प्रकार के कार्य अब डिजिटल रूप में यानि कि इंटरनेट की सहायता से किए जा रहे हैं। वर्तमान समय में हम 4जी तकनीक का इस्तेमाल कर रहे हैं और अब आगे हम धीरे-धीरे 5 जी तकनीक के ओर अग्रसर हो रहे हैं। आज के इस लेख में हम आप सभी लोगों को 5 जी नेटवर्क से जुड़ी सारी जानकारी प्रस्तुत कर रहे हैं।

5 जी का अर्थ होता है किसी भी मोबाइल नेटवर्क को 'G' से जाना जाता है जिसका मतलब Generation होता है अभी तक आपने जितने भी मोबाइल नेटवर्क को 2 जी, 3 जी, 4 जी, और 5 जी इन सभी को जेनरेशन के अनुसार नाम दिए गए हैं। अभी तक का सबसे आधुनिक मोबाइल नेटवर्क 5 जी को कहा जाता है जिसमे 5Th जेनरेशन के तकनीक का इस्तेमाल करके विकसित किया गया है। इससे आगे और भी आने वाले मोबाइल नेटवर्क को 6 जी और 7 जी को इसी तरह से नाम से दर्शाया जाएगा।

5 जी नेटवर्क टेक्नोलॉजी क्या है

5 जी की टेक्नोलॉजी दूरसंचार की टेक्नोलॉजी से संबंध रखती है। किसी भी तकनीक का इस्तेमाल वायरलेस तकनीक के जरिए किया जाता है। दूरसंचार की इस नई तकनीक में रेडियो तरंगों और विभिन्न तरह की रेडियो आवृत्ति का इस्तेमाल किया जाता है। अब तक जितने भी टेक्नोलॉजी दूरसंचार के क्षेत्र में आ चुके हैं, उनके मुकाबले में यह तकनीक काफी नई और तीव्रता से कार्य करने वाली तकनीक है। इस नवीन तकनीक का अंतिम मानव का निर्धारण आईटीयू यानी कि इंटरनेशनल टेलीकम्युनिकेशन यूनियन के हाथों किया जाता है। 5 जी की तकनीक 4 जी तकनीक के मुकाबले नेक्स्ट जनरेशन की तकनीक है और यह अब तक आ चुकी सभी तकनीक से सबसे ज्यादा आधुनिक तकनीक मानी जा रही है।

विशेषताएं

स्पीड

इस नई तकनीक की स्पीड करीब एक सेकंड में 20GB के आधार पर इसके उपभोक्ताओं को प्राप्त होगी। इस तकनीक के आ जाने से टेक्नोलॉजी से जुड़े हुए सभी कार्यों में तेजी से विकास होगा और सभी कार्य आसानी से काफी फास्ट स्पीड में किए जा सकेंगे।

इंटरनेट स्पीड में वृद्धि (Internet Speed)

अभी हम वर्तमान समय में 4 जी तकनीक का इस्तेमाल कर रहे हैं और इस तकनीक का इस्तेमाल करके हम 1 सेकंड में करीब 1GB की फाइल को डाउनलोड करने की क्षमता रखते हैं, वहीं 5 जी की तकनीक में हमें 1 सेकंड के अंदर करीब 10GB या इससे ऊपर की डाउनलोडिंग क्षमता वाली गति प्राप्त होगी।

डिजिटल इंडिया क्षेत्र में विकास

5 जी नेटवर्क के आ जाने से देश में डिजिटल इंडिया को एक अच्छी गति प्राप्त होगी और साथ ही देश के विकास में भी तीव्रता आएगी।

जीडीपी बढ़ोतरी में तेजी

हाल ही में आर्थिक सहयोग एवं विकास संगठन ने दावा देते हुए कहा है, कि देश में 5 जी के तकनीक के आ जाने से हमारे देश की जीडीपी एवं अर्थव्यवस्था में काफी सकारात्मक प्रभाव देखने को मिल सकता है।

नुकसान

- तकनीकी शोधकर्ताओं और विशेषज्ञों के अनुसार एक शोध में पाया गया कि 5 जी तकनीक की तरंगों दीवारों को भेदने में पूरी तरीके से असक्षम होती है। इसी के कारणवश इसका घनत्व बहुत दूर तक नहीं जा सकता है और इसी के परिणाम स्वरूप इसके नेटवर्क में कमजोरी पाई गई।

- दीवारों को भेदने के अलावा इसकी तकनीक बारिश, पेड़ पौधों जैसे प्राकृतिक संसाधनों को भी भेदने में पूरी तरीके से असक्षम सिद्ध हुई है। 5 जी तकनीक को लॉन्च करने के बाद हमें इसके नेटवर्क में काफी समस्या देखने को मिल सकती है।
- कई साधारण लोगों का मानना है, कि 5 जी तकनीक में जिन किरणों का उपयोग किया जा रहा है, उनका परिणाम काफी घातक सिद्ध हो रहा है और उसी का घातक परिणाम कोरोना वायरस है, परंतु अभी तक इस विषय में कोई साक्ष्य प्राप्ति नहीं हो सकी है।

पर्यावरण पर नुकसान क्या होगा ?

5 जी टावर्स के देश और दुनिया लगाय जाने पर कई तरह के सवाल उठ रहे हैं। 5 जी को लेकर सोशल मीडिया बहुत से खबर मिल रहे हैं। जिसको लेकर भारत हाल ही Bollywood की एक्ट्रेस जोही चावला ने देश 5 जी के टेस्टिंग और ट्रायल पर रोक लगाने के लिए सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर करागया था।

लेकिन सुप्रीम कोर्ट ने उल्टा ही जूही चावला पर 20 लाख रुपए का जुर्माना लगाया था जिसमें कोर्ट की तरफ से कहा गया कि यह सिर्फ कोर्ट के टाइम की बरबादी है यह कह कर है इस केस को बंद कर दिया है।

5 जी तकनीक को लेकर कई सारे मूवी बन चुकी जिसमें 5 जी टेक्नोलॉजी को बहुत खतरनाक बताया गया है अगर आप Robot 2.0 फिल्म को देखा है तो उसमें बताया गया है कि 5 जी नेटवर्क से निकालने वाली खतरनाक वेव्स से लाखों चिरियों की मौत हो जाती है।

5 जी नेटवर्क के विकसित होने पर अवश्य है कि इसके वजह से विकास के बढ़ोतरी में मदद मिलेगी और लोगो को ज्यादा जल्दी किसी भी ट्रेन टिकट और ऑनलाइन बुकिंग इस तरह के काम को बड़ी आसानी के साथ मिनटों में किया जा सकेगा।

जैसा की आपको ऊपर 5 जी नेटवर्क के फायदे और नुकसान बताय है। दुनिया का दस्तूर है किसी चीज से लोगो को फायदा होता है तो कुछ नुकसान भी होता है यह बात हमें समझनी होगी ।



जीवन की अविस्मरणीय घटना



आशा रामकृष्णन
(सहायक पर्यवेक्षक)

इस सृष्टि का निर्माण और संचालन अपने आप में अत्यधिक रहस्यपूर्ण है। सृष्टिकर्ता ब्रह्म ने सुख-दुःख विवाद आदि परस्पर विरोधी भावनाओं के धागे से इस संसार का ताना-बाना बुना है। मानव संवेदनशील प्राणी है, जीवन की ये घटनाएँ सुखद और दुःखद दोनों प्रकार की हो सकती हैं। मेरे जीवन में भी एक ऐसा अवसर आज से प्रायः दस वर्ष पूर्व आया था। मैं प्रयत्न करती हूँ कि उस घटना के प्रसंग को अपने मन और मस्तिष्क से निकाल दूँ, लेकिन सफल नहीं हो पाती, सफल हो भी तो नहीं सकती। वस्तुतः यह घटना ही ऐसी है।

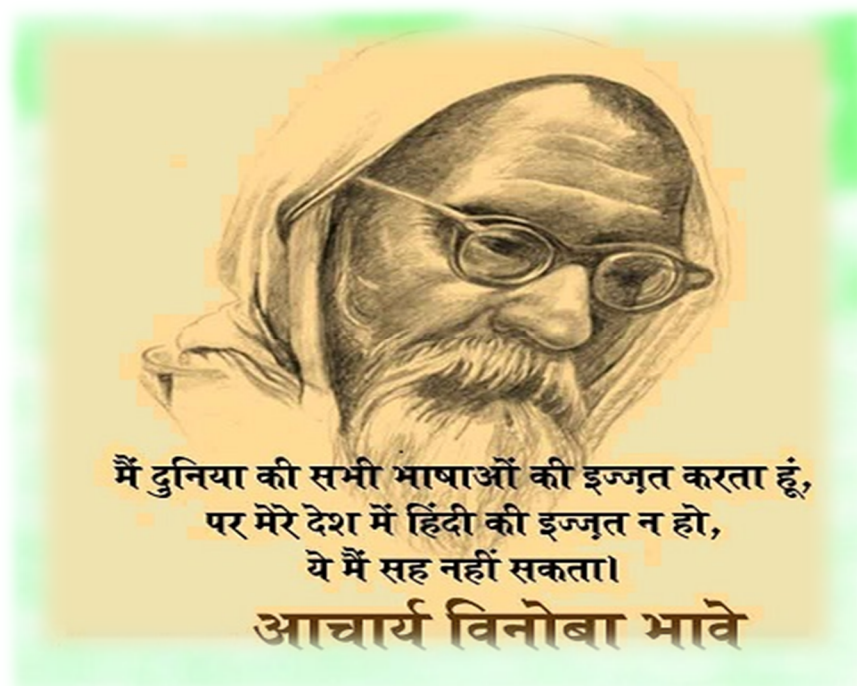
मैं पहले से नास्तिक प्रवृत्ति की रही हूँ। ईश्वरीय महिमा पर मेरा कभी भी विश्वास नहीं रहा बस यही सोचती थी कि मनुष्य जो भी करता है उसी का फल उसे मिलता है।

एक बार मैं रेलगाड़ी में यात्रा कर रही थी। सामान के नाम पर मेरे पास दो चार पुस्तकें और छोटी सी थैली ही थीं। यात्रा बड़ी सुखद थी। लोग परस्पर बातचीत में व्यस्त थे और मैं अपनी पुस्तकों को पढ़ रही थी। अचानक मुझे चीख-पुकार की आवाज़ें सुनाई दीं। उनका शोर-गुल सुनकर मेरा ध्यान भंग हो गया। स्थिति को समझने से पूर्व ही मैं अपने सीट से धम्म से नीचे आ गिरी और चाहकर भी संभल नहीं पायी। पूरा वातावरण भयभीत स्वरों तथा किसी भारी-भरकम वस्तुओं के टकराने-टूटने, गिरते जाने की भयानक आवाज़ से आक्रांत हो रहा था।

किसी व्यक्ति के मुख से सुना हमारी गाड़ी सामने की ओर से आने वाली एक अन्य गाड़ी से टकरा गई है और दोनों ही गाड़ियों के कुछ आगे के डिब्बे इंजन समेत पटरियों से उतर कर काफी नीचे खाई की ओर गिर रहे हैं। लोग काफी भयकुल होकर चिल्ला रहे थे। अपने प्राण सभी को प्रिय थे, स्वभावतः सभी अपने को बचाने के लिए ही प्रयत्नशील थे। मेरे निकट कुछ लोग सब कुछ भूलकर केवल भगवान को स्मरण कर रहे थे। मैंने सोचा कि ये लोग कितने मुर्ख हैं, कि घोर संकट के इन क्षणों में भी स्वयं को बचाने के बजाय, उस भगवान को पुकार रहे हैं। कहानियाँ तो भक्त-वत्सलता की मैंने बहुत सुनी थी, लेकिन मैं उन सभी को कोरी कल्पना नहीं मानती थी। मेरे डिब्बे में जो यात्रा कर रहे थे उनमें से तो कुछ केवल भय से बेहोश हो गए थे, तथा उनमें से कुछ सीटों के नीचे दबे या बुरी तरह फंसे पड़े थे। कुछ डिब्बे पलटने की प्रक्रिया से बाहर गिर कर डिब्बे के नीचे कुचल गए थे। मैं भी साहस खोती जा रही थी। मेरा मन मस्तिष्क और शरीर सभी कुछ सूत्र से होते जा रहे थे। संकट के उन

भयानक क्षणों में मुझे भी अनायास ही ईश्वर का स्मरण हो गया और एक नई ऊर्जा से भरकर मैं उठकर लड़खड़ाती हुई बाहर निकलने का रास्ता खोजने लगी। मुझे ऐसा लगा कि डिब्बे के दरवाजे के सामने एक गहरी खाई है, किन्तु यह केवल अनुमान ही था, क्योंकि अंधेरे में कुछ भी साफ नहीं दिखाई दे रहा था। आगे बढ़कर देखने के लिए मैंने जैसे ही कदम बढ़ाया मेरा पाव किसी चीज से टकराया और मैं बहुत तेजी से गिरती चली गई तथा कुछ भी निश्चित कर पाने से पूर्व से मेरा सिर भारी वस्तु से जा टकराया और मैं बाहर आ गिरी ।

अगले दिन जब सूर्य उदय हुआ तो अस्पताल के डॉक्टर और नर्सें मुझे सुरक्षित जगह पर पहुँचाने का प्रबंध करने लगे। उसी दिन से मैं ईश्वर का अस्तित्व को स्वीकारने लगी तथा मुझे विश्वास हो गया कि निश्चय ही सृष्टि में कोई अदृश्य शक्ति है जो समय-असमय मनुष्य की सहायता करती है।



कोविड-19 और ऑनलाइन कक्षा



श्रीमती आर.श्री विद्या
(व लेप अ)

कोविड-19 महामारी नेन केवल हमारे आर्थिक और व्यावसायिक संस्थानों पर ताले जड़े, बल्कि इसके साथ ही इसने हमारी शिक्षा व्यवस्था पर भी प्रतिकूल प्रभाव डाला है, जिसने हमारे स्कूलों के पारंपरिक कक्षाओं को त्यागने और इसके बजाय ऑनलाइन कक्षा में स्थानांतरित करने के लिए मजबूर कर दिया है। ऑनलाइन कक्षा वर्तमान में शिक्षाप्रदान करने का एक तरीका बन चुका है। जिसमें वर्चुअल क्लासरूम एवं डिजिटल सेवा का उपयोग शामिल है। शिक्षक और छात्र ऑनलाइन माध्यम से एक संचार में साइन इन करते हैं और उपकरणों के सामने बैठकर कक्षा का वातावरण महसूस करते हैं।

किन्तु , शुरूआत में इस नई प्रणाली में कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ रहा जैसे हर किसी के पास मोबाइल, टेबलेट का उपलब्ध न होना, खराब इंटरनेट कनेक्टिविटी की परेशानी , उपलब्ध एप्लीकेशन जैसे गुगल मीट, जूम, टिचमिंटआदिका उपयोग करने में लोगों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है, लेकिन धीरे-धीरे लोग इन सभी मुश्किलों को पार कर पढ़ना-पढ़ाना शुरू कर चुके हैं। एक साल का समय भी बीत चुका है बच्चे एक अकादमिक वर्ष भी पूरा करके अगले कक्षा में चले गए हैं। पर फिर भी ऑनलाइन शिक्षा व्यवस्था में कई सुधार करना और चुनौतियों का समाधान होना बाकि हैं जैसे शिक्षक के लिए वर्ग में शिष्टाचार बनाए रखना भी एक चुनौती है खासकर जब यह बिना माइक्रोफोनम्यूट किए ही बात होती है, तो आवाज के शोर से पूरे वर्ग को परेशानी होती है, साथ ही साथ शिक्षक को यह भी सुनिश्चित करने के लिए कि बच्चे ध्यान दे रहे हैं या नहीं प्रत्येक बच्चों की वीडियो स्ट्रीम पर ध्यान देने की जरूरत होते हैं।

ऑनलाइन शिक्षा के फायदे देखें तो पहले बच्चों की सुरक्षा महामारी की काल में घर से पढ़ाई बिना रुके चल रही है मां बाप की नजर बच्चे पर हमेशा बनी रहती है, बच्चे टेक्नोलॉजी को सीख रहे

स्कूल आने जाने का समय बचता है। बच्चे घर बैठे पढ़ सकते हैं साथ ही टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल करने से बच्चों में जानने की इच्छा प्रबल हुई है शिक्षा के क्षेत्र में यह प्रणाली एक क्रांति लाने की दिशा में हर दिन नए कदम की ओर अग्रसर है जो पहले कभी नहीं हुआ।

ऑनलाइन क्लास के नुकसान भी हैं सभी बच्चे खुद घर पर हैं इसलिए नए माहौल में उनका विचलित होना आसान है शांत जगह और फोन में डाटा की कमी बिजली का न होना घर में बड़ों का रहना आदि अनेक मुसीबतों का सामना करना पड़ता है पढ़ाई का माहौल ना बन पाना इंटरनेट का गलत इस्तेमाल करना छात्रों को समझना आने की समस्या, इंटरनेट गति का न होना, कुछ घर ऐसी जगह स्थित है जहां टावर नहीं होता आंखों के स्वास्थ्य पर भी बुरा प्रभाव पड़ता है छात्रों में शिक्षा के प्रति उत्साह में कमी होती है।



श्रद्धांजलि



आशा रामकृष्णन
(सहायक पर्यवेक्षक)

मामा जी आप बहुत याद आते हैं
अन्दर ही अन्दर दिल रोता है,
आज का यह दिन आपके यादों में
मैं आप लोगों के सामने चंद पक्तियां
प्रस्तुत करने जा रही हूँ।

हमारे महादेवम परिवार के सबसे महान,
हमारे सभी के लिए एक मार्ग दर्शन,
थे मेरे मामा जी, आप बहुत याद आते है,
घबराता है, कुछ ठीक से कह नहीं सकती,
हूँ, ऐसी मुश्किल स्थिति आ पहुँची है
हमारे परिवार में ।

बात हो खुशी की या हो दुःख के
बादल घने आँखें दूर तक आपको
तलाशती हैं मगर दूर तक आप दिखते,
नहीं हैं आप, बस आँखें थक जाती है,
लेकिन आप, नज़र नहीं आते हैं ।

6 दिसम्बर 2 बजे मेरे प्यारे मामा जी,
हम सभी को अलविदा कर, छोड़कर चले
गये ऐसा लगता है मानो हर पल, हर सांस
सब रुक गई, थम गई, इस पल से सब
नीरस हो गयी यह दुनिया, हर सांस में
उनकी याद आती है, मामा जी आप
बहुत याद आते है ।

सभी के प्यारे, दुलारे थे मेरे मामा जी,
बच्चों से लेकर बड़ो तक इनकी मीठी बातों
में एक जादु सा था जो हम सभी को
झेलते थे, सभी को मोहित कर देते थे
उनका प्यार, मीठी बातें, उनके गीत,
उनके चुटकुले हर कोने- कोने पर गूंज रही है ।
हर पल ऐसा महसूस होता है कि मेरे मामा जी
यहीं कहीं गये है बाज़ार और अभी लौट
आ जायेगा ।

याद है मुझे जब मैं परेशान रहती थी,
वह चुपके से आते थे, मेरा दर्द माप लेते थे,
और कहते थे बेटी चिंता क्यों करते हो
“मैं हूँ ना!”

आज मैं रो रही हूँ, आपकी यादों में
“मैं हूँ ना” का स्वर मेरे कानों में गुँजता है
नहीं सुनाई देती है वह गंभीर आवाज़
“मैं हूँ ना” ॥

मेरे मामा जी हर क्षेत्र में माहिर हैं
उनके गुणों के गान के लिए यह कलम,
कागज़ कम है, उनके बारे में लिखने के लिए
पन्नों के पन्ने लिखे जाय तो भी कम होगा।

क्षमा, दया, त्याग, ममता, सभी से भरे हैं
मेरे मामा जी समय था मैं भी बेफिक्री से
रहते थे, क्योंकि पता था मुझे मेरे सर पर आप का
हाथ था, बेफिक्र तो क्योंकि आपका साथ था, तो सच
कहती हूँ पूरे दिल से आप बहुत याद आएंगे ।



कल्याण गतिविधियाँ

साल 2020-21 भी पिछली बार की तरह कोरोनाग्रस्त रहा तो कल्याण कक्ष की गतिविधियाँ भी ज्यादातर कोरोना-निवारण कार्यों में रही ।

कल्याणकारी गतिविधियों में सबसे अधिक भूमिका, कार्यालयीन पदधारियों के कोरोना-संबंधी मामलों जैसे स्वच्छता-कार्य, प्रतिरोधक-वर्धक-आपूर्ति, अस्पताल भर्ती, कोरोना जांच करवाना आदि में रही । अतः वर्ष 2020-21 में कल्याण कक्ष को स्वास्थ्य, स्वच्छता एवं प्रतिरोधन कार्यों के निर्वाहन में व्यतीत करना पड़ा । फिर भी सौ फीसदी उनके इन गतिविधियों से उस आपातकाल को काबू में कर पाए, जो प्रशंसनीय है । कुछ ऐसे कार्यों के मील-पत्थर निम्न प्रकार है ।

- कोरोना-प्रतिरोधन गतिविधियों के सिलसिले में आर टी अई- चेन्नै, एम ए बी- चेन्नै सहित सभी कार्यालय सदस्यों एवं परिवार के लिए दिनांक 08.06.2020 एवं 01.07.2020 को “आरसेनिक एल्बम-30” बाँट दिया गया ।
- “चिकित्सा से बेहतर प्रतिरोधन”- कोविड-19 महामारी के सिलसिले में “कबसुर कुडिनीर” (सभी पदधारियों को चार दिनों तक निम्न तिथियों में दिया गया)-

06.05.2020

02.09.2020

12.10.2020

27.10.2020

14.12.2020

01.02.2021

01.03.2021

17.03.2021

30.03.2021

- चिकित्सा से बेहतर प्रतिरोधन - कोविड-19 महामारी के सिलसिले में “कबसुर कुडिनीर” (निवासी लेखापरीक्षा में स्थित टी.एन. ए.बी. में स्थित कार्यालयीन सदस्यों के लिए तीन दिनों के लिए दिलाया गया -

08.06.2020

08.07.2020

12.08.2020

- “चिकित्सा से बेहतर प्रतिरोधन”- कोविड-19 महामारी के सिलसिले में “कबसूर कुडिनीर” (आर टी अई एवं महालेखाकार (ले व ह) के पदधारियों के लिए, 08.11.2020से 20.11.2020 तकदिलाया गया ।
- स्वास्थ्य जागरूकता भाषण- खासकर कोविड-19 निवारण के बारे में श्री सी मरिया अरपुत सामी, जिला स्वास्थ्य शिक्षक, डी पी एच पी एम, अई ई सी- चेन्नै द्वारा दिलाया गया।
- 26.03.2021 को कोविड-19 निवारण प्रतिविधि के रूप में सभी पदधारियों के लिए टीकाकरण शिविर का आयोजन किया गया । करीब 178 पदधारी लाभान्वित हुए ।
- आतंकवाद विरोधी दिवस का शपथ पूरे कार्यालयीन पदधारियों को दिनांक 21.05.2020,सामाजिक दूरी बरतते हुए दिलाया गया ।
- अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर महिला सदस्यों के लिए खासकर, प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता “मशहूर महिला विजेताओं” पर चलाई गई ।
- “चुनोतियों को चुनें”(Choose the Challenges)पर लेखन प्रतियोगिता आयोजित की गई। अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस 09.03.2021 को मनाया गया जिसमें मुख्यातिथि डॉ.आशा रजनी, प्रोफेसर ने समाज में महिलाओं की उपलब्धियों पर चिन्तापोषक भाषण प्रस्तुत किया ।



निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को
मूल, बिन निज भाषा-ज्ञान के, मिटत
न हिय को सूल...



आओ थोड़ा हंस ले !!



रवि कुमार ।।
(लेखापरीक्षक)

❖ बात करने के तरीके
भगवान से- हाथ जोड़ के, आँखें भर के,
गुरुदेव से- नज़र झुका के
माँ से - खुलकर
पिता से - आदर से
दोस्तों से - हँसी मजाक से
और
पत्नी से - पत्नी से बात करने के तरीके की खोज अभी भी जारी है।

❖ ऐसी चीजों से दूर रहें जो आपको मोटा बनाती हो-
जैसे कि वजन तौलने की मशीन, शीशा, तस्वीरें,
और
.
.
पतले दोस्त !

❖ गर्मी शुरू हो गयी है, कृपया जब भी फ्रिज से पानी निकाल कर
पिये,
तो वापस भर के रख दे,
वरना...लेक्चर पानी से शुरू होगा
और
.
.
मोबाइल, पढ़ाई, बेरोज़गारी पर खत्म होगा।

Designed by freemil

❖ आपको जब लगे कि
आपकी माँ आपसे
ज्यादा प्यार करती है
तो

.

.

पोछा लगाने के बाद गीले फर्श पर निकल कर देखें।

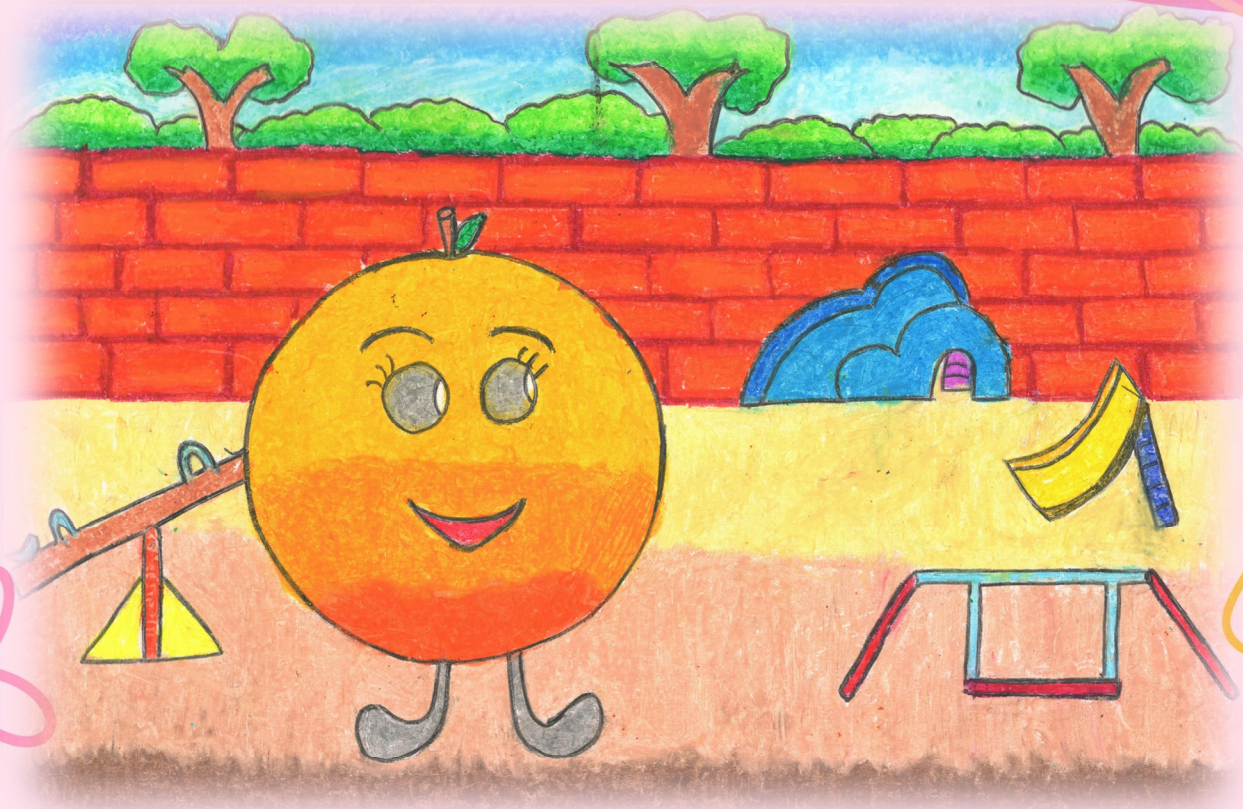
❖ चाहे कितना भी पढ़ लो,
कितनी भी डिग्री ले लो
पर
और सुनाओ का जबाव नहीं दे पाओगे।

❖ पप्पू कार धो रहा था,
तभी पास से आँटी गुजरी,
और पूछा- कार धो रहे हो ?
पप्पू - नहीं आँटी पानी दे रहा हूँ,
शायद बड़ी होकर बस बन जाये...!





प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) और महालेखाकार (लेप-II) के
कर कमलों से सुमन ई-गृह पत्रिका 2020 का प्रकाशन



नन्ही परी के नन्हे हाथों से चित्रकारिता के क्षेत्र में सराहनीय पहल...



टी. ए. अशिंंगा

सुपुत्री-श्री टी आनंद कुमार/सलेपअ



